प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**
Time- 3 Hours **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
Objective Type Questions

प्रश्न 1. सही जोड़ियां बनाइये–

	अ	–	ब
(अ)	विशाल स्नानागार	–	बौद्ध धर्म
(ब)	अष्टांग मार्ग	–	मोहनजोदड़ो
(स)	बौद्ध ग्रंथों की भाषा	–	एक पुरातात्विक स्त्रोत
(द)	अभिलेख	–	नव पाषाण काल
(इ)	पहिए का ज्ञान	–	पाली

Match the following.

	A	-	B
(a)	Common Bath Floors	-	Buddhism
(b)	Ashtang Marg	-	Mohanjodaro
(c)	Language of Buddha	-	An Archaeologicla Source
(d)	Inscriptions	-	Neo Stone Age
(e)	Discovery of wheel	-	Pali

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

1. वेदों की संख्या कितनी है?
2. ''नीवी'' किस प्रकार का वस्त्र था?
3. मंदिरों का नगर किसे कहा जाता है?
4. चोल काल में शासन की सबसे छोटी इकाई थी?
5. चंदेल वंश के प्रथम शासक का नाम लिखिए?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. How many Vedas are there?
2. What kind of cloth was Neevi?
3. Which is the city of temples?

4. What was the smallest administrative unit in the Chola administration?

5. Who was the first ruler of Chandel dynasty?

प्रश्न 3. सही विकल्प का चयन कीजिए।

(अ) तराइन का द्वितीय युद्ध कब हुआ था –

(i) 1922 ई. (ii) 1191 ई.

(iii) 1077 ई. (iv) 1078 ई.

(ब) पानीपत का प्रथम युद्ध कब लड़ा गया –

(i) 1526 ई. (ii) 1527 ई.

(iii) 1525 ई. (iv) 1528 ई.

(स) लोदी वंश का संस्थापक कौन था –

(i) बहलोल लोदी (ii) सिकंदर लोदी

(iii) इब्राहिम लोदी (iv) इनमें से कोई नहीं

(द) सैय्यद वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था –

(i) खिज्रखां (ii) मुहम्मद शाह

(iii) आलम शाह (iv) मुबारक शाह

(इ) ताजमहल का निर्माण कितने वर्षों में हुआ था –

(i) 22 वर्षों में (ii) 20 वर्षों में

(iii) 21 वर्षों में (iv) 23 वर्षों में

Choose the correct answer in the following.

(a) Second battle of Tarrain was fought in the year -

(i) 1192 AD (ii) 1191 AD

(iii) 1077 AD (iv) 1528 AD

(b) When was the first battle of Panipat fought -

(i) 1526 AD (ii) 1527 AD

(iii) 1525 AD (iv) 1528 AD

(c) Who was the founder of the Lodhi Dynasty -

(i) Bahlol Lodhi (ii) Sikandar Lodhi

(iii) Ibrahim Lodhi (iv) None of these

(d) The Best ruler of Sayied Dynasty was -

(i) Khij Khan (ii) Mohammad Shah

(iii) Alam Shah (iv) Mubarak Shah

(e) In how many years the Taj Mahal was built -

(i) In 22 years (ii) In 20 years

(iii) In 21 years (iv) In 23 years

प्रश्न 4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) शिवाजी की माता का नाम.....था।

(ii) .....भारत का अनितम गवर्नर जनरल था।

(iii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना.....ने की।

(iv) मराठा तथा केसरी समाचार पत्रों के सम्पादक.....थे।

(v) असहयोग आन्दोलन गांधी जी के नेतृत्व में.....में आरंभ हुआ।

Fill in the blanks.

(i) The name of the Shivaji was.....

(ii) .....was the last Governer General of India.

(iii) .....established Indian National Congress.

(iv) Editor of Maratha and Kesri was.....

(v) Non-Cooperation Movement Started in.....under the leadership of Gandhiji.

प्रश्न 5. निम्नलिखित वक्यों में सत्य एवं असत्य बताइये –

(i) विदिशा नगर मध्यकाल में भेलसा के नाम से प्रसिद्ध था।

(ii) भीम बेटका की गुफाएं झांसी में स्थित है।

(iii) खजुराहो के मंदिरों का निर्माण गुप्त राजाओं ने करवाया।

(iv) कायथा (उज्जैन) अपने गुप्तकालीन अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

(v) मध्यप्रदेश में झण्डा सत्याग्रह 13 मार्च सन् 1923 ई. को शुरू हुए।

Write true or false.

(i) Vidisha was known as Bhelsa in Medieval Times.

(ii) Bhimbhetika caves are located in Jhansi.

(iii) The temple of Khajuraho were built by Gupta rulers.

(iv) Kaytha (Ujjain) is famous for his remains of Guptas period.

(v) In Madhya Pradesh Flag Movement started on 13th March 1923 AD

प्रश्न 6. जैन धर्म के त्रिरत्नों को समझाइए।

Explain the Tri-ratans of the Jainism.

अथवा
Or

उत्तर वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था को समझाइए।

Explain the 'Ashram System' of the post Vedic Period.

प्रश्न 7. अशोक के धर्म की विशेषताएं लिखिए।

Write the Chief Characteristics of Ashoka's religion.

अथवा
Or

मौर्य वंश के पतन के चार कारण लिखिए।

Decribe four reasons behind the desline of the Mauryan Dynasty.

प्रश्न 8. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए क्या कार्य किये? वर्णन कीजिए।

What steps did Ashoka take to spread Buddhism? Describe.

अथवा
Or

मौर्य कालीन इतिहास जानने के प्रमुख साधनों को संक्षेप में समझाइये।

Give an account of the Chief sources of information of the history of the Maurvan Period.

प्रश्न 9. राजपूतकालीन समाज में स्त्रियों की दशा का वर्णन कीजिए?

Describe the condition of women in society during Rajput Age.

अथवा

Or

राजपूतकालीन आर्थिक दशा का वर्णन कीजिए।

Describe the economic life during Rajput Period.

प्रश्न 10. पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर की सफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe the reasons behind Babar's success in the first Battle of Panipat.

अथवा

Or

अकबर को एक राष्ट्रीय शासक क्यों कहा जाता है? विवेचना कीजिए।

Why is Akbar considered to be a National Rule? Discuss.

प्रश्न 11. पुरंदर की संधि की चार प्रमुख शर्तों का वर्णन कीजिए।

Describe the main conditions of Treaty of Purander.

अथवा

Or

मराठों के उत्कर्ष के कोई चार कारण बताइये।

Give any four reasons for the rise of Marathas.

प्रश्न 12. इलाहाबाद की संधि की चार शर्ते लिखिए।

Write the four main conditions of the Treaty of Allahabad.

अथवा

Or

भारत के लिये नवीन मार्गों की खोज क्यों की गई? कोई चार कारण लिखिए।

Why was it essential to discover new routes to India? Give four reasons.

प्रश्न 13. पुरापाषाण कालीन मानव का भोजन क्या था?

What was the food of the Early Man?

अथवा

Or

मध्यपाषाण कालीन मानव के औजार व रहन–सहन के विषय में लिखिए।

Write about the tools and living of the Middle Stone Age Man.

प्रश्न 14. रजिया सुल्तान के पतन के क्या कारण थे?

What were the reasons for the downfall of Raziya Sultan?

अथवा

Or

विजय नगर साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे?

What were the causes of the decline of Vijayanagar Empire?

प्रश्न 15. हुमायूं की असफलता के कोई पांच कारणों को समझाइये।

Give any five reasons for Humayun's failure.

अथवा

Or

शाहजहां के शासन काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है? स्पष्ट कीजिए।

Shahjahan's reign is considered to be the Golden Period of the Indian history. Clarity the statement.

प्रश्न 16. शिवाजी की सैन्य व्यवस्था की विवेचना कीजिए।

Discuss in detail the military strategy of Shivaji.

अथवा

Or

शिवाजी की राज्य व्यवस्था का विवरण दीजिए।

Describe the details of state organization of Shivaji.

प्रश्न 17. 1857 ई. की क्रांति की असफलता के पांच कारण लिखिए।

Give any five reasons for the failure of th revolt of 1857.

अथवा

Or

1857 ई. की क्रांति के पांच सैनिक कारण बताइये।

Give five military reasons for the struggle of 1857.

प्रश्न 18. एक समाज सुधारक के रूप में राजा राम मोहन राय का क्या योगदान है?

What is the contribution of Raja Ram Mohan Roy as Social reformr?

अथवा

Or

ईश्वचन्द्र विद्यासागर को एक महान समाध सुधारक क्यों कहा जाता है?

Why Ishwar Chandra Vidhya Sagar is called a great reformer.

प्रश्न 19. मध्यप्रदेश का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में योगदान का वर्णन कीजिए।

Describe the contribution of Madhya Pradesh in first was of Independence.

अथवा

Or

सांची की मूर्तिकला का वर्णन कीजिए।

Describe the Sculptures of Sanchi.

प्रश्न 20. भारत में पुर्तगालियों के पतन के कारण समझाइये।

Describe the causes behind the Portuguese defeat in India.

अथवा

Or

अंग्रेजों तथा नवाब सिराजुद्दौला के बीच संघर्ष के कोइ छः कारण लिखिए।

Give six reasons for the struggle between Sirajudaulla and the Britishers.

प्रश्न 21. भारतीय स्वाधीनता अधिनियम की प्रमुख धाराओं की विवेचना कीजिए।

Write the main provisions of the India Independence Bill.

अथवा

Or

भारत छोड़ों आन्दोलन की असफलता के छः कारणों को स्पष्ट कीजिए।

Give six reasons of the failure of quit India movement.

– – – – – –

आदर्श उत्तर

इतिहास
History

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर

उत्तर 1. सही जोडियां –

	अ	–	ब
(अ)	विशाल स्नानागार	–	मोहनजोदड़ो
(ब)	अष्टांग मार्ग	–	बौद्ध धर्म
(स)	बौद्ध ग्रंथों की भाषा	–	पाली
(द)	अभिलेख	–	एक पुरातात्विक स्त्रोत
(इ)	पहिए का ज्ञान	–	नव पाषाण काल

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. एक वाक्य में उत्तर –

(1) वेदों की संख्या चार है।

(2) ''नीवी'' जो कमर के नीचे पहना जाता था।

(3) मंदिरों का नगर एलोरा के मंदिरों को कहा जाता है।

(4) चोल काल में शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम (गांव) थी।

(5) चन्देल वंश के प्रथम शासक का नाम नन्नुक था।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सही विकल्प का चयन –

(अ) 1192 ई.

(ब) 1526 ई.

(स) बहलोल लोदी

(द) खिज्रखां

(इ) 22 वर्षों में

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. रिक्त स्थान –

(i) जीजा बाई

(ii) लार्ड माउन्ट बेटन

(iii) ए.ओ. ह्यूम

(iv) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

(v) सन् 1920 ई.

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. सत्य/असत्य –

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. जैन धर्म के त्रिरत्न निम्नलिखित तीन है :–

1. **सम्यक ज्ञान –** सम्यक ज्ञान से तात्पर्य है सच्चा ओर संपूर्ण ज्ञान जो तीर्थकरों के उपदेशों से प्राप्त होता है।
2. **सम्यक दर्शन –** सम्यक दर्शन का अर्थ है, तीर्थकरों में पूरी श्रद्धा और अखण्ड विश्वास तथा सत्य के प्रति श्रद्धा रखना।

3. **सम्यक्क चरित्र –** इसका अर्थ है सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करना। जब मनुष्य अपनी इन्द्रियों तथा कर्मों पर पूरा नियंत्रण कर लेता है तथा इन्द्रियों की विषय वासना में नहीं फंसता, तो उसका आचरण शुद्ध हो जाता है।

4 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2+2=4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

उत्तर वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था – प्राचीन भारत में आश्रम व्यवस्था प्रचलित थी, प्रत्येक व्यक्ति का जीवन आश्रमों में बंटा हुआ था। ये आश्रम इस प्रकार से थे –

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम –** इस काल में मनुष्य संयम नियम का पालन करके विद्यार्थी जीवन व्यतीत करता था। ब्रह्मचर्य आश्रम जीवन के प्रथम 25 वर्ष की आयु तक का होता था।
2. **गृहस्थ आश्रम –** ब्रह्मचर्य जीवन के पश्चात मनुष्य विवाह कर गृहस्थ जीवन व्यतीत करता था। इसमें 25 से 50 वर्ष की उम्र तक होता था।
3. **वानप्रस्थ आश्रम –** वानप्रस्थ आश्रम में मनुष्य गृहस्थ आश्रम का परित्याग कर सांसरिक चिन्ताओं से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास कर सन्यास आश्रम में प्रवेश करने की तैयारी करता था। यह काल 50 से 75 वर्ष की उम्र तक होता था।
4. **सन्यास आश्रम –** वानप्रस्थ के पश्चात सन्यास आश्रम प्रारंभ होता है। यह जीवन के अंतिम 25 वर्ष होते थे। परिवार व समाज से अलग रहकर मनुष्य अपना समस्त समय भगवान के चिन्तन तथा मोक्ष प्राप्ति में लगता था।

संक्षिप्त में लिखने पर 2 अंक एवं चारों की व्याख्या करने पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. अशोक के धर्म (धम्म) की विशेषताएं –

1. अशोक का धम्म पूर्णतः उदार था जिसमें धर्मान्धता और कठ्ठरता नहीं थी।

2. अशोक का धर्म सार्वभौम था। जिसमें प्रचलित सभी धर्मों की बातें समाहित थी। इसमें संकीर्णता को कोई भी स्थान नहीं दिया गया था।
3. 'धम्म' अहिंसा पर विशेष जोर देता है ओर सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव जगाता है।
4. आडम्बर पूर्ण अनुष्ठानों के स्थान पर मूल धार्मिक स्वभाव पर बल दिया गया है।
5. 'धम्म' किसी भी धर्म को स्वीकार करने की अनुमति प्रदान करता है। यह किसी भी देवी देवता के अपमान की अनुमति नहीं देता।
6. 'धम्म' का प्रचलन शान्तिप्रिय, अहिंसा तथा प्रेम के आधार पर ही किया गया।

4 अंक

प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं उक्त एवं अन्य 4 बिन्दुओं की व्याख्या करने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

मौर्य साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **अयोग्य उत्तराधिकारी** – अशोक के पश्चात एक के बाद एक निर्बल शासक सिंहासनारूढ़ होते गये इसके द्वारा विशाल साम्राज्य को संचालित नहीं किया जा सका साम्राज्य का विभाजन निरंतर जारी रहा। यदि विभाजन न होता तो उत्तर पश्चिम से यूनानी आक्रमण को कुछ समय के लिये रोका जा सकता था।
2. **अशोक की ब्राह्मण विरोधी नीति** – पशु बलि का विरोध स्पष्ट रूप से ब्राह्मण धर्म का विरोधी ही था। अशोक द्वारा कुछ ऐसे नियम बनाये गये थे जिससे सीधा प्रहार ब्राह्मणों की जीविका पर पड़ता था। जिसके परिणाम स्वरूप प्रतिरोध और विद्रोह ने मौर्य साम्राज्य को पतन की दिशा प्रदान की।

3. **पुष्य मित्र शुंग का विद्रोह –** सेना का निरीक्षण करते हुए ब्रहद्रथ की पुष्य मित्र शुंग ने हत्या कर दी। इस तरह धार्मिक प्रतिरोध स्वरूप मौर्य वंश और बौद्ध धर्म को पतित करने का बीड़ा उठाया।
4. **अहिंसात्मक नीति –** अशोक की शांतिप्रियता और अहिंसा की नीति साम्राज्य पतन का कारण बनी। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने युद्ध नीति को त्यागकर धार्मिक विजय नीति का बीड़ा उठाया और अहिंसा की नीति को इतने दृढ़ संकल्प और उत्साह से अपनाया कि सैनिक दृष्टिकोण से राष्ट्र एकदम दुर्बल हो गया। जिससे यूनानी आक्रमण का सामना करने की क्षमता भी नहीं रही।

उपर्युक्त चार एवं अन्य कोई कारण को विस्तार से लिखने पर 4 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए निम्न कार्य किए –

1. **तीर्थ यात्रा –** अशोक बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पश्चात लगभग एक वर्ष तक निष्क्रिय रहा। इसके बाद उसने अनेक बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्रा की। ब्राह्मणों और श्रमणों को दान दिया तथा अनेक स्मारक बनवाये। उसने बिहार यात्रा और रथ यात्रा का परित्याग कर दिया और धर्म यात्रा प्रारंभ की।
2. **व्यक्तिगत आदर्श :–** अशोक ने स्वयं अपने चरित्र को बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के अनुकल बनाया और स्वयं मांस खाना तथा शिकार करना बंद कर दिया इन आदर्शों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।
3. **धर्म विजय :–** अशोक ने हमेशा के लिए साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीति का परित्याग कर दिया। अतः उसने मनुष्य के ह्रदय पर विजय प्राप्त करने का संकल्प किया। भेरी घोष का स्थान धर्म घोष ने ले लिया।
4. **धर्म मंगल की व्यवस्था :–** संपूर्ण प्राणी मात्र के कल्याण के लिए अनेक लोक हितकारी कार्य किये। सड़कों के दोनों और छायादार वृक्ष लगवाए,

कुंओं और विश्राम गृहों का निर्माण करवाया तथा पशुओं और मनुष्यों की चिकित्सा के लिए चिकित्सालय खुलवाए। उसने संघ, मठ, बिहार बनवाये।

4 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से चार एवं अन्य कोई कार्य लिखने पर 4 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

मौर्य कालीन इतिहास जानने के साधन :–

1. **मुद्रा राक्षस –** विशाखदत्त द्वारा रचित संस्कृत का प्रसिद्ध नाटक 'मुद्रा राक्षस', चन्द्रगुप्त, चाणक्य, मगध की क्रांति, नंदवंश उसका अंत तथा तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक दशा आदि का ज्ञान कराता है।
2. **अर्थशास्त्र –** चाणक्य सम्राट चन्द्रगुप्त का विश्वासपात्र मंत्री, परामर्शदाता एवं सहायक था। उसने ''अर्थशास्त्र'' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में उस समय की राजनीति और प्रशासन के सिद्धांतों, न्याय, आय–व्यय के साधनों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के बारे में वर्णन मिलता है, जो मौर्य शासनकाल की जानकारी देता है।
3. **धार्मिक साहित्य –** जैन धर्म और बौद्ध धर्म के साहित्य (दीप वंश, महा वंश) में तत्कालीन समाज, राजनीति आदि की जानकारी मिलती है।
4. **मेगस्थनीज का यात्रा वृत्तान्त –** मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य की राज सभा में सेल्यूकस का राजदूत था उसने अपनी पुस्तक ''इण्डिका'' में चन्द्रगुप्त मौर्य युगीन जीवन और प्रशासन पर विस्तार से लिखा है।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर छात्र को पूर्ण कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. **राजपूत कालीन समाज में स्त्रियों की दशा :–** राजपूत समाज में स्त्रायों की स्थिति पूर्ण रूपेण अच्छी नहीं थी। राजघरानों एवं धनवानों की कन्याओं को शिक्षा दी जाती थी, अन्य वर्ग के लोगों की कन्याएं शिक्षा से वंचित थी। समाज

में पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों का सम्मान कम था। पर्दा प्रथा थी पर राजघरानों की कन्याओं को अस्त्र–शस्त्र तथा घुड़सवारी की शिक्षा भी दी जाती थी। समाज में सती प्रथा का भी प्रचलन था, जौहर प्रथा भी प्रचलित थी। राजपूतों में बाल हत्या का भी प्रचलन था।

4 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 4 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

राजपूत कालीन आर्थिक दशा :– राजपूत कालीन आर्थिक दशा की निम्न विशेषताएं थी –

1. **कृषि –** कृषि तथा पशुपालन जनता का मुख्य व्यवसाय था, गेहूं, जौ, चना, चांवल, कपास और गन्ना आदि मुख्य फसलें थी, कृषि कार्य हेतु फावड़ा, हल, दरांती आदि उपकरणों का उपयोग होता था। सिंचाई का प्रबंध करना राजा का प्रमुख कर्तव्य था। चन्देल तथा परमार शासकों ने बड़ी–बड़ी झीलों का निर्माण करवाया। मालवा के परमार शासक राजा भोज ने भोजपुर (भोपाल) में एक वृहत ताल का निर्माण करवाया। चन्देलों द्वारा निर्मित राहिल्य सागर और कीर्ति सागर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, चौहानों ने आणा सागर, वीसला आदि तालाबों का निर्माण करवाया। कृषकों का शोषण सामंती व्यवस्था के कारण होता था। राजा कृषि पर विशेष ध्यान देता था।
2. **उद्योग धंधे –** राजपूत शासकों ने उद्योग धंधों के विकास पर भी बल दिया। इस युग में उद्योगों का विकास पैतृक व्यवसाय के रूप में हुआ था जैसे– वस्त्र उद्योग, धातु उद्योग, खनिज उद्योग एवं विविध प्रकार के शिल्पों का विकास हुआ।
3. **व्यापार और वाणिज्य –** व्यापारियों को एक राज्य से दूसरे राज्य में माल ले जाने के लिए अनेक स्थानों पर चुंगियां देनी पड़ती थी। आंतरिक व्यापार स्थल एवं जल दोनों मार्गों से होता था। विदेशी व्यापार भी होता था। भारत,

बर्मा, तिब्बत के बीच व्यापार स्थल मार्ग से होता था। खंभात, भडौच, थाना, सोमनाथ प्रमुख बन्दरगाह थे।

4. **मुद्रा –** इस युग में सोने के सिक्कों का बहुत कम प्रचलन था। चांदी और तांबे के सिक्कों का अधिक प्रचलन था। शुद्ध सोने के सिक्के बहुत कम मिले है। इस युग में वस्तु विनिमय और कौड़ियों का अधिक प्रचलन था।

उपर्युक्त वर्णन करने पर 2+2= 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. पानीपथ के युद्ध में बाबर की सफलता के निम्न कारण थे –

1. **बाबर का तोपखाना –** बाबर का तोपखाना भी उसकी विजय का प्रमुख कारण बना। इब्राहिम के पास तोपखाना नहीं था। उसके सैनिक तोपों के प्रयोग से अनभिज्ञ थे लेकिन दूसरी ओर बाबर के पास विशाल तोपखाना था जो कि उस्ताद अली तथा मुस्तफा जैसे अनुभवी योग्य व्यक्तियों के नियंत्रण में थी। बाबर की तोपों की गोलाबारी के सामने इब्राहिम की सेना नहीं टिक सकी।
2. **बाबर की सैन्यकला :–** बाबर एक अनुभवी सैनिक तथा महान सेनानायक था। उसे निरंतर तीस वर्ष तक युद्ध करना पड़ा जिससे उसमें सैनिक प्रतिभा का वकास हुआ बाबर ने वैज्ञानिक ढंग से युद्ध लड़ने की कला का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अतः इब्राहिम लोदी निपुण सेनानायक बाबर का सामना न कर सका।
3. **इब्राहिम लोदी की अनुभवहीन सेना –** इब्राहिम लोदी की सेना में अनुभवहीन तथा अशिक्षित सैनिक थे। उनमें राष्ट्रप्रेम तथा धार्मिक उत्साह नहीं था। लोदी की सेना में अधिकतर भाड़े के ट्टटू थे जिनको देश के हितों की अपेक्षा अपने जीवन तथा धन की चिंता थी। सैनिकों में एकता, अनुशासन की कमी थी। यद्यपि भारतीय सैनिक बहुत थे। लेकिन युद्ध कुशलता उसमें नहीं थी किन्तु दूसरी ओर बाबर की सेना सुशिक्षित, अनुशासित तथा सुव्यवस्थित थी।

4. **इब्राहिम लोदी का अफगान सरदारों पर अविश्वास –** इब्राहिम लोदी अफगान सरदारों को संदेह की दृष्टि से देखता था, इस कारण सभी अफगान सरदार उससे घृणा करते थे। उसके दुर्व्यवहार से तंग आकर दौलत खां लोदी तथा आलम खां ने इब्राहिम के विरूद्ध विद्रोह करके बाबर को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया और उसका साथ दिया इस प्रकार अफगान सरदारों तथा जनता ने इब्राहिम लोदी का साथ नहीं दिया और उसे अकेले ही बाबर का सामना करना पड़ा।

4 अंक

उपर्युक्तानुसार चार बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

अकबर एक राष्ट्रीय शासक था जिसके निम्न कारण थे :–

1. **राजनीतिक एकता की स्थापना –** अकबर ने संपूर्ण साम्राज्य का अपूर्व विकास करने के साथ–साथ उसे राजनीतिक एकता के सूत्र में भी पिरोया। सम्पूर्ण साम्राज्य में उसने एक सी प्रशासनिक व्यवस्था लागू की, लगान तथा सिक्कों की भी एक सी व्यवस्था लागू की सभी नागरिकों को समान अधिकर दिये गये।
2. **धार्मिक एकता की स्थापना –** अकबर से पूर्व मुस्लिम शासक हिन्दुओं की पूर्णतया उपेक्षा करते थे तथा राजकीय पदों पर केवल मुसलमानों को ही नियुक्त करते थे। अकबर ने इस नीति का परित्याग कर धार्मिक एकता तथा सहिष्णुता की नीति को अपनाया। उसने राजकीय पदों पर भी योग्यता के आधार पर हिन्दुओं को नियुक्त किया। उसने हिन्दुओं को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की, तथा जजिया कर व तीर्थ यात्रा करो को समाप्त कर दिया। इस प्रकार धार्मिक एकता की स्थापन की।
3. **नवीन धर्म ''दीन–ए–इलाही'' की स्थापना –** अकबर ने धर्म निरपेक्षता की नीति का पालन करने के साथ–साथ सभी धर्मों की श्रेष्ठ बातों व तथ्यों का

समन्वय करने के लिए दीन–ए–इलाही धर्म की स्थापना की। वास्तव में इस धर्म का प्रमुख लक्ष्य धार्मिक कठ्ठरता को समाप्त करना था।

4. **सामाजिक एकता की स्थापना –** अकबर ने सामाजिक एकता स्थापित करने के भी प्रयास किए थे। दास प्रथा को उसने समाप्त कर दिया था तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया। बाल विवाह पर उसने प्रतिबंध लगाया तथा हिन्दू और मुसलमानों में आपसी विवाह तथा खान–पान को भी प्रोत्साहित किया था।

उपर्युक्त वर्णन एवं अन्य कोई भी वर्णन किये जाने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. पुरन्दर की संधि – 22 जून सन् 1665 को की गई पुरन्दर की संधि की प्रमुख शर्ते निम्नलिखित थी –

1. शिवाजी ने बीजापुर के विरूद्ध मुगलों को सैनिक सहायता देने और उनसे युद्ध न करने का वचन दिया।
2. रायगढ़ के दुर्ग सहित 12 दुर्गों और एक लाख ह्रण की वार्षिक आय के प्रदेश शिवाजी के पास ही रहने दिया गया।
3. शिवाजी ने अपने 23 दुर्ग और उसके आस–पास का प्रदेश जिसकी आय लगभग साढ़े चार लाख ह्रण वार्षिक थी, मुगलों को दे दिये।
4. शिवाजी ने मुगल सम्राट औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली।
5. अपने पुत्र शम्भाजी को 5000 अश्वारोहियों की सेना सहित मुगलों की सेवा में भेजना स्वीकार कर लिया।
6. मुगल सम्राट ने शिवाजी को बीजापुर विजय के बाद कोंकण में चार लाख ह्रण वार्षिक आय का प्रदेश देना स्वीकार किया।

4 अंक

उपर्युक्त चार वर्णन एवं अन्य कोई भी वर्णन किये जाने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

मराठों के उत्कर्ष (उत्थान, उदय) के कारण निम्नलिखित है –

1. **महाराष्ट्र में धार्मिक जागृति –** महाराष्ट्र में अनेक सुधारक हुए। उन्होंने जातिगत भेदभाव की निन्दा की तथा मराठों को एकता के सूत्र में पिरोया। शिवाजी के गुरू रामदास ऐसे ही धर्म प्रचारकों में से एक थे। एकनाथ तथा तुकाराम ने भी महाराष्ट्र में यही काम किया।
2. **प्राकृतिक कारण –** महाराष्ट्र की प्रकृति ने मराठों का विशिष्ट निर्माण किया है। पहाड़ी प्रदेश, वर्षा की कमी तथा बंजर भूमि की अधिकता ने मराठों को परिश्रमी बना दिया है। पहाड़ियां उनकी सुरक्षा के लिए किलों का कार्य करती थी, इन अजेय दुर्गो के भीतर रहकर वे शत्रुओं को सहजता से पराजित कर देते थे।
3. **भाषा एवं साहित्य –** संत तुकाराम तथा एकनाथ ने मराठों में मातृभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न किया। एक भाषा तथा एक धर्म ने उन्हें संगठित रहने के लिए बाध्य किया, एकता के साथ भाई–चारे की भावना को भी बल मिला। इस तरह साहित्य तथा भाषा ने भी मराठा जाति के संगठन में महत्वपूर्ण योगदान किया।
4. **राजनीतिक चेतना –** देश की राजनीतिक परिस्थितियों ने उन्हें संगठित रहने के लिए बाध्य किया, जिससे मराठे जागृत हुए, दक्षिण की शिया रियासतें आपस में लड़कर शक्तिहीन हो गई थी, दक्षिण में उनका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं था। इस राजनीतिक रिक्तता को भरने का अवसर मराठों को शिवाजी के नेतृत्व में प्राप्त हुआ। शिवाजी की दृढ़ता, संगठन क्षमता व दूरदर्शी योजनाओं में मराठे अपने अभियान में सफल हुए।

उपरोक्तानुसार चार कारण एवं अन्य कोई भी कारण लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. इलाहबाद संधि की शर्ते :– मई 1965 ई. में क्लाइव तथा अवध के नवाब तथा मुगल शासक शाह आलम के साथ मित्रता की संधि कर ली। शर्ते निम्नलिखित है:–

1. कड़ा तथा इलाहाबाद के जिले नवाब से लेकर मुगल सम्राट को दे दिये।
2. मुगल सम्राट शाह आलम को 26 लाख रूपया पेंशन देना निश्चित किया गया।
3. मुगल सम्राट शाह आलम ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को प्रदान की।
4. शुजाद्दौला ने युद्ध क्षतिपूर्ति के लिए कम्पनी को 50 लाख रूपये देना स्वीकार किया।
5. कंपनी को अवध के राज्य में बिना कोई कर दिए व्यापार करने की छूट मिल गई।
6. अंग्रेजों ने अवध के नवाब को सैनिक सहायता देना स्वीकार किया, किन्तु इन सेनाओं का व्यय उसे ही वहन करना था।
7. शुजाद्दौला को अवध का प्रदेश पुनः सौंप दिया गया परंतु उसे कड़ा और इलाहाबाद के दो जिले छीन लिये गये।

4 अंक

उपरोक्तानुसार चार संधि को विस्तार से लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

नवीन मार्गों की खोज निम्नानुसार की गई :–

1. **प्राचीन व्यापारिक मार्गों का बंद होना –** आधुनिक युग के प्रारंभ में कुस्तुन्तुनियां एवं पूर्व भूमध्यसागर पर तुर्कों का अधिकार होने के कारण मध्यकालीन व्यापारिक मार्ग बन्द हो चुके थे। परिणाम स्वरूप नये मार्गों की खोज हुई।

2. **ईसाई धर्म का प्रचार –** ईसाई पादरी एवं धर्म प्रचारक अपने धर्म का नये देशों में प्रचार करना चाहते थे।
3. **कुतुबनुमा का आविष्कार –** कुतुबनुमा के आविष्कार से नाविकों की समुद्री यात्रा अधिक सरल हो गई। जिससे नाविकों ने नये मार्गों की खोज की।
4. **आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु –** यूरोपीय देशों को पूर्वी देशों के व्यापार से अधिक लाभ होता था। लेकिन इन मार्गों पर तुर्कों का अधिकार होने से यूरोपीय देश लाभ से वंचित हो गये।
5. **पूर्वी देशों की वस्तुओं की मांग –** पूर्वी देशों में निर्मित अनेक वस्तुओं की मांग अधिक थी। इन वस्तुओं का उत्पादन पश्चिमी देशों में नहीं होता था। अतः इन आवश्यकताओं को पूरा करने भारत में यूरोपीय जातियों का आगमन दक्षिण भारत में आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष के लिये नवीन मार्गों की खोज की।

उपरोक्तानुसार चार बिंदुओं पर विस्तार देने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. भोजन – इस काल में मानव अपना भोजन कन्दमूल, फल–फूल, पशुओं का मांस आदि से प्राप्त करता था। कन्दमूल, फलों आदि को मुनष्य वनों से खाने योग्य जड़ों और कीड़े मकोड़ों को घरौंदों में एकत्रित करता था। इन के अतिरिक्त झुण्ड बनाकर जैसे सुअरों, हिरणों, बकरों आदि का शिकार करता था। इस काल का मानव झीलों व नदियों से मछली भी पकड़कर भोजन में उपयोग में लाता था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार देते हुए लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1. **औजार** :– इस काल में मानव ने अधिक सूक्ष्म और उत्तम औजार बनाए। इस काल में औजार नुकीले, धारदार और पैने होते थे। इस काल में एक इंच से दो इंच तक के छोटे (हाथी मार) औजार बनाए। औजार में लकड़ी

के हत्थे का भी प्रयोग करने लगा था। भाला, चाकू, हथौड़े, फरसा, धनुष–बाण, काटने, छीलने, फेकने, खोदने चीरने आदि के औजार उपयोग में लाए जाते थे।

2. **रहन–सहन –** इस काल के मानव में सामूहिक रूप से एक स्थान पर रहकर जीवन जीना सीख लिया था। इस काल का मानव कन्दराओं में व छोटी–छोटी पहाड़ियों पर हरता था तथा समय–समय पर निवास स्थान बदलता था।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 14. पतन के कारण :–

1. **रजिया का स्त्री होना –** रजिया की विफलता का प्रधान कारण उसका नारी होना था यदि वह पुरूष होती तो जुनैदी, तुर्को अमीर आदि उसका विरोध न करते।

2. **तुर्क सरदारों का प्रभाव –** रजिया की असफलता का दूसरा कारण तुर्की सरदारों का प्रभावशाली होना बताया था उन दिनों तुर्की अमीरों का राज्य में अधिक प्रभाव था।

3. **रजिया की निरंकुश शासन पद्धति –** रजिया ने अपने विपक्षियों पर विजय प्राप्त करने के उपरांत स्वेच्छाचारी तथा निरंकुश शासन का प्रयत्न किया था।

4. **रजिया के धर्म विपरीत कार्य –** रजिया की असफलता का कारण धर्म विरूद्ध पर्दा त्याग देना और याकूत से प्रेम करना भी था।

5. **जन सहयोग की कमी –** रजिया की विफलता का कारण उसे भारतीय जनता से सहायता प्राप्त न होना भी था, उस समय के सुल्तानों के लिए भारतीय जनता का सहयोग तथा, समर्थन प्राप्त करना सर्वथा असंभव भी था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार कारण एवं अन्य भी कारण लिखने पर प्रत्येक कारण पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1. **बहमनी वंश से निरंतर युद्ध –** विजय नगर राज्य को विस्तार के लिए उत्तर के अपने पड़ोसी बहमनी राज्य से बार–बार टकराना पड़ा। विजय नगर के पास एक विशाल सेना थी लेकिन कार्य कुशलता की दृष्टि से वह अधिक श्रेष्ठ नहीं थी जबकि बहमनियों की घुड़सवार सेना व तोपखाना अधिक अच्छे थे।
2. **दोषपूर्ण शासन व्यवस्था –** शासन व्यवस्था निरंकुश थी। शासन के व्यक्तित्व पर साम्राज्य को समृद्धि तथा सुदृढ़ता आधारित थी। निर्बल शासकों के काल में साम्राज्य का विघटन शुरू को गया था।
3. **पुर्तगालियों का आगमन –** पुर्तगालियों का आगमन भी विजय नगर के लिए घातक सिद्ध हुआ। यह लोग व्यापारियों के रूप में आए थे पर समुद्री तटों पर अधिकार जमाकर उन्होंने विजय नगर पर अपना प्रभाव जमा लिया।
4. **दक्षिण मुस्लिम राज्यों में हस्तक्षेप –** कृष्णदेव राय की मृत्यु पश्चात विजय नगर का विवेक भी जाता रहा था। क्योंकि राम राय जैसे शासकों ने दक्कनी राज्य की आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप आरंभ कर दिया था जिसके फलस्वरूप दक्कनी महासंघ की स्थापना हुई और तालिकोट का युद्ध विजय नगर साम्राज्य के लिए अंतिम प्रहार साबित हुआ।
5. **उत्तराधिकारियों की अयोग्तया –** विजय नगर साम्राज्य के अयोग उत्तराधिकारियों विजय नगर साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण थे।

कृष्णदेव राय की मृत्यु के पश्चात विजय नगर साम्राज्य में कोई भी शासक कृष्णदेव राय के समान कुशल व योग्य नहीं थे। जिसकी वजह से विजय नगर साम्राज्य का पतन हो गया।

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 15.

1. **साम्राज्य का विभाजन** – हूमांयू ने अपने शासन काल के प्रारंभ में अपने भाईयों में साम्राज्य का विभाजन कर दिया। वह हुमायूं की भयंकर भूल थी। उसने हिन्दाल को मेवात अल्वर का जिला जागीर के रूप में दे दिया। पंजाब, काबुल तथा कन्धार कामरान को दिए थे। संभल मिर्जा अफसरों को दिया था इस विभाजन से हुमायूं को शासन चलाने में निरंतर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा इसमें व्यवस्था चरमरा गई।
2. **कालिजर पर आक्रमण की असफलता –** अपने राज्यारोहण के कुछ ही माह पश्चात उसने कालिंजर पर आक्रमण किया और वहां के किले का घेरा डाल दिया। कई माह तक घेरा पड़ा रहा। अंत में हुमायूं ने कालिंजर के शासक के साथ समझौता कर लिया। इसमें हुमायूं को जन–धन की हानि का मुआवजा देना स्वीकार कर लिया। हुमायूं इतने से ही संतुष्ट हो गया और वहां से कूच कर दिया।
3. **अफगानों के विरूद्ध प्रथम अभियान की असफलता –** सिकन्दर लोदी के पुत्र महमूद लोदी ने अफगानों की सहायता से हुमायूं के विरूद्ध विद्रोह का झण्डा बुलंद कर दिया और वह जौनपूर की ओर बढ़ता आ रहा था। इसलिए कालिंजर से शीघ्र ही पूर्व की ओर बढ़ा और दौहरिया नामक स्थान पर हुमायूं ने महमूद को पराजित किया। उसके तुरंत बाद चुनार के दुर्ग पर घेरा डाल दिया यह घेरा चार मास तक चलता रहा और अन्त में शेरखां ने कूटनीति से काम लेकर हुमायूं के पास आत्म समपर्ण कर प्रस्ताव भेजा और मुगल सम्राट के प्रति वफादार रहने का वचन दिया। हुमायूं ने अपने शत्रु का

विश्वास करते हुए आत्म समर्पण स्वीकार कर लिया और घेरा उठा लिया और आगरा लौट गया। यह भी हुमायूं की बहुत बड़ी भूल थी।

4. **समय तथा धन का दुरूपयोग –** चुनार से लौटने के बाद उसने आगरा तथा दिल्ली में रंगरेलियां मानाना शुरू कर दिया। यद्यपि उसका राजकोष पहले से ही खाली था लेकिन उसने उसकी परवाह न करते हुए उत्सवों तथा रंगरेलियों में तमाम धन व्यय कर दिया। इसकी वजह से आर्थिक व्यवस्था पर बुरा असर पड़ा। साथ ही यह उत्सव ऐसे समय में मनाया गया जबकि हुमायूं चारो ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था उसने डेढ़ वर्ष का अमूल्य समय ऐसे आराम में बरबाद कर दिया।
5. **बहादुरशाह के विरूद्ध अभियान –** आगरा में कुछ समय ठहरने के बाद हुमायूं ने बहादुरशाह को पत्र लिखकर अपने शत्रुओं को समर्पित करने का आग्रह किया लेकिन बहादुर शाह ने मांग को ठुकरा दिया। हुमायूं ने उसके विरूद्ध कूच करने का आदेश दे दिया। यह हुमायूं की सबसे बड़ी भूल थी जबकि यह अवसर बहादुरशाह को पूर्ण रूप से कुचलकर राजपूतों को मित्र बना सकता था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

एलफिस्टन के अनुसार ''शाहजहां का शासन काल संभवतः भारतीय इतिहास का सर्वाधिक समृद्धिशाली युग था।

1. **शांति और सुव्यवस्था का युग –** शाहजहां के काल की प्रमुख विशेषता यह थी कि वहां इस संपूर्ण काल में पूर्णतया शांति और व्यवस्था रही। इस संबंध में टेवरनियर का मत है कि ''शाहजहां के शासन काल में शांति व सुरक्षा थी और यात्रा बड़ी सुगम और सुरक्षित थी। चोरी अथवा डकैती का कोई

भय नहीं था'' शाहजहां के शासन काल में जो भी आंतरिक विद्रोह हुए उनका उसने सरलता से दमन कर दिया।

2. **आर्थिक संपन्नता का युग –** शाहजहां के काल में आर्थिक विकास भी तीव्रता से हुआ विभिन्न उद्योग धन्धों तथा व्यापार उन्नति पर थे। एलफिस्टन के अनुसार ''शाहजहां का काल भारत के इतिहास में एक सबसे अधिक समृद्धि का युग था।''
3. **उत्तम प्रशासनिक व्यवस्था –** शाहजहां एक कुशल प्रशासक भी था वह शासन संबंधी कार्यों को स्वयं करता था। उसके शासन काल में चोरी डकैती आदि अपराध के कार्यों में उल्लेखनीय कमी आई।
4. **जनकल्याणकारी तथा प्रजा वत्सल सम्राट –** शाहजहां द्वारा अपने शासन काल में जनकल्याण के अनेक कार्य किए गए। उसने अनेक सड़कों का निर्माण करवाया था। उनके दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवाए। अनेक विश्राम गृहों तथा सरायों का भी निर्माण करवाया। अकाल के सयम दीन–दुखियों तथा अनाथों की अपूर्व सहायता भी की।
5. **स्थापना कला का अपूर्व विकास –** शाहजहां के काल में सर्वाधिक विकास स्थापना कला का हुआ। उसके द्वारा निर्मित भवनों में सबसे अधिक कला पूर्ण तथा आकर्षक आगरे का ताजमहल है जो उसने अपनी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया था। दिल्ली का लाल किला तथा उसके अन्दर निर्मित भवन, दिल्ली की जामा मस्जिद उच्च कोटि की हिन्दू मुस्लिम शैली के उदाहरण है। अली मस्जिद शाहजहानाबाद के दुर्ग आज भी उस काल की कला के सुंदरतम प्रतीक है। वास्तव में स्थापना कला का इस काल में जो अपूर्व विकास हुआ उसी आधार पर शाहजहां का स्वर्ण युग कहा जाता है।

उपरोक्तानुसार पांच बिन्दु एवं अन्य कोई भी विस्तार से लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 16. **सैन्य व्यवस्था –** शिवाजी उच्च कोटि के सेनापति थे। उनका बड़ा सुव्यस्थित सैन्य संगठन था। पूर्व में कोई स्थाई सेना नहीं थी, सैनिक छः माह विश्राम करते थे और छः माह युद्ध करते थे। शिवाजी ने केवल लड़ने के उद्देश्य से एक विशाल मराठों सेना संगठित की थी उनकी सेना के प्रमुख अंग थे – (1) घुड़ सवार (2) पैदल सेना (3) हाथी (4) तोप खाना (5) नौ सेना।

1. **घुड़सवार –** घुड़सवार सैनिक शिवाजी की सेना के प्रमुख अंग थे। उनके पास 30 या 40 हजार घुड़सवार थे। 25 घुड़सवारों पर एक हवलदार था। हवलदारों पर एक जमादार था तथा 10 जमादारों के ऊपर एक हजारी होता था उसके ऊपर पंच हजारी होता था यह सेना सेनापति के अधीन होती थी उसे सरे नौबत भी कहते थे। घुड़सवार दो प्रकार के होते थे–

   (1) बारगीर – सरकारी वेतन पर काम करते थे।

   (2) सिलाहदार – यह भाड़े या किराए के सैनिक होते थे। यह स्वयं अपने छोड़े तथा अस्त्र–शस्त्रों का प्रबंध करते थे।

2. **पैदल सेना –** पैदल सैनिकों का एक नायक होता था। पांच नायकों पर एक हवलदार दो या तीन हवलदारों पर एक जमादार, दस जमादारों पर एक हजारी होता था, उसके ऊपर सप्त हजारी होता था। जिसे सेनापति या सरेनौबत कहते थे। शिवाजी की एक लाख पैदल सेना थी।
3. **हाथी सेना –** शिवाजी के पास 1260 हाथी तथा 1500 से 3000 तक ऊंट थे।
4. **तोपखाना –** शिवाजी के पास एक शक्तिशाली तोपखाना भी था जिसमें 80 तोपे थी। गोला बारूद भी उनके अनुरूप था। फ्रांसीसीयों से गोला बारूद खरीदा जाता था।
5. **नौ सेना –** शिवाजी के पास 200 जहाज थे। उनका बड़ा बेड़ा कोलाबा में रहता था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

अर्थव्यवस्था (राजस्व) – शिवाजी के आय स्त्रोत को मजबूत बनाने के लिए भूमि प्रबंध पर बड़ा जोर दिया था। अर्थ व्यवस्था के सुधार हेतु उन्होंने निम्न कार्य किए –

1. **जमींदारी प्रथा की समाप्ति –** शिवाजी ने जागीरदारी प्रथा समाप्त कर दी थी क्योंकि जागीरदार शक्ति बढ़ाकर विद्रोह कर देते थे।
2. **ईमानदार अधिकारियों की नियुक्ति –** लगान वसूल के लिए ईमानदार अधिकारी नियुक्त किये गये थे। घूसखोर तथा बेईमान अधिकारियों पर कड़ी कार्यवाही का प्रावधान था।
3. **जमीन की पैदाइश –** जमीन की पैदाइश पर उसकी उन्होंने श्रेणियां बनवाई तथा लगान सुनिश्चित किया गया।
4. **ऋण व्यवस्था –** अकाल के समय किसानों को ऋण सुविधाएं प्राप्त थी वे उसे आसान किश्तों में अदा कर सकते थे।
5. **ठेके की व्यवस्था –** लगान वसूल करने वाले अधिकारियों पर कठोर नजर रखी जाती थी।

उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 17.

1. **समय के पूर्व प्रारंभ –** क्रांति के लिए 31 मई सन् 1857 का दिन निश्चित किया गया था परंतु बीरकपुर तथा मेरठ की घटनाओं के कारण क्रांति समय से पहले ही शुरू हो गई।
2. **एक उद्देश्य का अभाव –** क्रांति में भाग लेने वाले नेता किसी एक उद्देश्य की आजादी को लेकर नहीं लड़ रहे थे कोइ धर्म की रक्षा के लिए, कोई अपनी राज्य की रक्षा के लिए तथा कोई देश की आजादी के लिए लड़ रहा था।

3. **योग नेतृत्व का अभाव –** यद्यपि क्रांति में बहादुर शाह जफर, नाना साहब, तात्या टोपे, कुवर सिंह, लक्ष्मी बाई आदि ने नेतृत्व प्राप्त किया किन्तु सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता की कमी थी।
4. **सहयोग व संगठन का अभाव –** क्रांति में अधिकांश जमींदार तथा राजा–महाराजा ने अंग्रेजों का साथ दिया। संपूर्ण संगठन की कमी के कारण क्रांति को व्यापक नहीं बनाया जा सका।
5. **साधन की कमी –** क्रांतिकारियों के पास तलवार व पुराने किस्म के अस्त्र–शस्त्र नहीं थे। इनकी तुलना में अंग्रेजों के पास आधुनिक हथियार व तोपखाना भी था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य असफलताओं के काण को विस्तार देने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

सैनिक कारण :– 1857 ई. के विद्रोह का आरंभ कंपनी के फौज के सैनिकों की बगावत से हुआ ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी की अनवरत युद्धों में विजय दिलाने वाले भारतीय सैनिक, जिनकी संख्या अंग्रेजों की तुलना में तिगुनी थी। एकाएक किन परिस्थितियों में विद्रोह हुए इसके निम्न कारण थे –

1. **भारतीय समाज के अभिन्न अंग है –** ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक भारतीय समाज के अभिन्न अंग थे जो भारतीयों की दुखद स्थिति से भली भांति परिचित थे। ब्रिटिश नीतियों के फलस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के पतन और कृषकों की दयनीय आर्थिक दशा से भारतीय सैनिक ग्लानि से अपने आपको ही दोषी मानते थे।
2. **भेदभाव की नीति –** कम्पनी की फौज के भारतीय सैनिकों को अंग्रेज सैनिक एवं अधिकारी अपमानित तो करते ही थे साथ ही उनके दायित्व के सफल प्रदर्शन के बाद भी उन्हें पदोन्नति नहीं मिलती थी और न ही उन्हें वेतन

लाभ मिल पाता था भारतीय सैनिकों के उन्नति के लिए सारे रास्ते बंद कर रखे थे।

3. **सैनिकों का अपमान –** अंग्रेज सैनिक अधिकारी भारतीय सैनिकों को सदैव अपमानित करते रहते थे और अधिकारी अपनी जातीय श्रेष्ठता और रंग के सामने भारतीय सैनिकों को हीन समझते थे। फलस्वरूप दोनों के मध्य मतभेद कायम हा चुका था। फलतः 1857 ई. के विद्रोह में एकजुट होकर अंग्रेजों के विरूद्ध मैदान में आ गए।
4. **सामरिक स्थलों पर अधिकार –** ब्रिटिश फौज में भारतीयों की संख्या एक के अनुपात में तीन थी। संख्या अधिक होने के कारण प्रमुख सामरिक स्थलों पर भारतीय सैनिकों का ही अधिकार था। इससे विद्रोह की चर्चा में शस्त्रों की पूर्ति आसानी से होता देख वे विद्रोह के लिए तत्पर हो गए शीघ्र ही यह विद्रोह विस्तृत हो गया।
5. **अंग्रेज सैनिकों की पराजय –** विद्रोह के पूर्व अंग्रेज सैनिकों की कुछ युद्धों में शर्मनाक पराजय हुई थी। इस पराजय के साथ ही अंग्रेज सैनिकों के श्रेष्ठ हथियारों और सदैव विजेता होने की धारणा समाप्त हो गई। भारतीय सैनिकों के मन में यह बात बैठ गई थी कि अंग्रेज सैनिकों को परास्त करना बहुत कठिन या दुष्कर कार्य नहीं है। प्रथम अफगान युद्ध 1834–1842 और क्रीमिया युद्ध 1854–1856 में अंग्रेजों की पराजय ने प्रतिष्ठा को समाप्त कर दिया। फलस्वरूप विद्रोह आसान हो गया था।

उपरोक्तानुसार पांच बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 18. भारत में सर्वप्रथम धर्म सुधार का आह्वान राजा राम मोहन राय ने किया था। यही वजह है कि उन्हें भारत के नवजागरण का अग्रदूत सुधार आन्दोलन का प्रवर्तक स्वीकार करते है।

1. **महान चिंतक –** राजा राम मोहन राय दूरदर्शी होने के कारण साथ एक महान चिंतक भी थे। सर्वप्रथम हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों एवं आड़म्बरों के

खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने सबसे पहले सती प्रथा के विरूद्ध तर्क संगत वक्तव्य जारी किया और इसे रोकने हेतु समाज को प्रेरित किया। इतना ही नहीं ब्रिटिश प्रशासन को उन्होंने सती प्रथा के निषेध हेतु कानून बनाने के लिए बाध्य किया।

2. **आधुनिक शिक्षा के प्रबल समर्थक** – राजा राम मोहन राय भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। इनकी मान्यता थी कि पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा ही भारत में एकता सद्भाव और स्वाधीनता के प्रति जिज्ञासा निर्मित की जा सकती है। पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा ही भारतीयों को प्रगतिशील विचारों की जानकारी मिलेगी और इसमें राष्ट्रप्रेम की भावना बलवती होगी।
3. **राष्ट्रवाद के जनक** – भारत के आर्थिक शोषक और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सर्वप्रथम राष्ट्रवाद का शंखनाद राजाराम मोहन राय ने ही किया। उनकी मान्यता थी कि विभिन्न वर्षों विभक्त भारतीय समाज में सुधार एकेश्वरवाद के प्रचार से सामाजिक एकता का वातावरण निर्मित किया जा सकता है तथा इसके द्वारा जातीयता व कट्टरता को समाप्त किया जा सकता है।
4. **पत्रकारिता के अग्रदूत** – राजाराम मोहन राय भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत स्वीकार किए गए है। उन्होंने एक समाचार पत्र संवाद कौमुदी का प्रकाशन किया था। इसके अतिरिक्त बंगला, फारसी, हिन्दी और अंग्रेजी में भी उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। इन पत्रों के माध्यम से साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा राजनीतिक विचारों का प्रचार किया। सन् 1833 में साम्राज्यवादी ताकतों को बेनकाब करके समाचार पत्रों के नियमन के विरूद्ध आन्दोलन किया। फलस्वरूप सन 1853 में सरकार ने समाचार पत्रों को कुछ स्वतंत्रता प्रदान की।
5. **विश्व राजनीति के ज्ञाता** – राजाराम मोहन राय विश्व राजनीति के घटनाक्रमों का सूक्ष्म अध्ययन करते थे। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के वे प्रबल हिमायती थे। प्रो. विपिनचन्द्र का मत है कि राजाराम मोहन राय ने

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं में दिलचस्पी ली और हर जगह उन्होंने स्वतंत्रता, जनतंत्र और राष्ट्रीयता के आन्दोलनों का समर्थन, हर प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और जुर्म का विरोध किया।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं कोई अन्य कारण लिखने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक महान समाज सुधारक थे। समाज सुधार के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। तत्कालीन समाज में फैली हुई बुराईयों को दूर करने के लिए उन्होंने निम्न प्रयास किए।

1. **बाल विवाह का विरोध –** बाल विवाह उस समय की एक मुख्य बुराई थी उन्होंने इसका विरोध किया तथा इसके विरूद्ध समाज में जागरूकता फैलाई।
2. **स्त्री शिक्षा पर बल –** उन्होंने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया तथा स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक बताया।
3. **विधवा पुनर्विवाह –** उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन तथा ऐसे विवाह को मान्यता भी दी। वे विधवा विवाह के समर्थक थे उन्होंने समाज में इसका प्रचार भी किया।
4. **बहु विवाह का विरोध –** विद्या सागर जी ने बहु विवाह का विरोध किया तथा ऐसे लोगों को सामाजिक तौर पर बहिष्कृत करने का समर्थन किया।
5. **मध्यपान का विरोध –** उन्होंने मध्यपान का भी एक सामाजिक बुराई की तरह विरोध किया और उसे बन्द करने की मांग की।

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 19. 1857 ई. में मेरठ से प्रांरभ की क्रांति माह भर में सारे देश में फैल गई। मध्यप्रदेश भी अछूता नहीं रहा।

1. **महाकौशल क्षेत्र में योगदान –** महाकौशल का क्षेत्र नागपूर के मराठा शासक अप्पा जी भोंसले के प्रभाव क्षेत्र में रहा है। अंग्रेजों द्वारा अप्पा जी के मण्डला, बैतूल, छिंदवाड़ा, सागर व नर्मदा के कछार के क्षेत्र छीन लिए अतः उन्होंने तात्या टोपे और नाना साहब पेशवा के कमल और रोटी के चिन्ह के साथ पूरे महाकौशल में अपने आदमी भेजकर विद्रोह के लिए जन समर्थन जुटाना शुरू कर दिया। फलस्वरूप सर्वप्रथम रानी दुर्गावती के वंशज शंकर शाह के विद्रोह का बिगुल फूंका। इनके साथ ही जबलपुर से लगे विजय राधेगढ़ पुरवा के सूरज सिंह ओर रामगढ़ मण्डला की गौड़ रानी अवंती बाई ने अंग्रेजों को हटाना शुरू कर दिया। धीरे–धीरे वह आग नरसिंहपुर, होशंगाबाद, मण्डला, बैतूल, सिवनी में फैल गई जिन्हें काफी मेहनत के बाद अंग्रेजों द्वारा दबा दिया गया। शंकर शाह को अंग्रेजों ने जबलपुर में तोपों के मुह में बांधकर उड़ा दिया। अवंती बाई ने स्वयं अपना अंत कर दिया।
2. **ग्वालियर और नीमच में विद्रोह –** 3 जून 1857 को नीमच छावनी के पैदल और घुड़सवार सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। 14 जून को रानी झांसी के पक्ष में मुरार छावनी के सैनिकों ने वहां के अंग्रेज बंगलों में आग लगाकर विद्रोह कर दिया।
3. **इन्दौर –** 1 जुलाई को इन्दौर से महू छावनी से विद्रोह शुरू हुआ और गुना तक फैल गया। किन्तु ग्वालियर के सिन्धिया का सहयोग न मिलने के कारण यह विद्रोह दबा दिया गया।
4. **जबलपुर में विद्रोह –** 15 जून 1857 में जबलपुर, मण्डला, सिवनी में विद्रोह की आग भड़क उठी जिसमें शंकरशाह के बेटे रघुनाथ शाह, रामगढ़ की रानी अवंती बाई ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला और वीरगति को प्राप्त हुए।
5. **तात्याटोपे का बलिदान –** रानी लक्ष्मीबाई के वीर गति प्राप्त करने पर तात्या टोपे ने अंग्रेजों के विरूद्ध गुरिल्ला युद्ध जारी रखा पर नगर राजा भान सिंह ने तात्याटोपे को आश्रय तो दिया पर अंग्रेजों को उसकी उपस्थिति की

सूचना देकर पकड़वा दिया। 18 अप्रैल 1959 को तात्याटोपे को फांसी दे दी गई।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

सांची की मूर्तिकला – इस काल की मूर्तिकला के सर्वोत्कृष्ट नमूने सांची में है। मुख्य स्तूप की वेण्टणियां सादा है। उन पर सजावट का काम नहीं है। किन्तु उसके चारों प्रवेश द्वारा अगणित उभरी हुई मूर्तियों से भरे पड़े है। अधिकतर मूर्तियों का संबंध युद्ध की जीवन घटनाओं से है। कुछ घटनाएं तो बार–बार अंकित की गई है। साथ ही साथ इन मूर्तियों में जीवन के सामान्य दृश्यों की भरमार है। देखने वाले के सामने उस युग के जीवन के विभिन्न पहलू नाचने लगते है और क्षणभर के लिए वह अपने वर्तमान युगको भूलकर उस युग में जा खड़ा होता है। यक्ष और यक्षणियां मस्ती से हंस रही है। नगरों को आक्रमणकारी घेरे हुए है, स्त्री पुरूष पवित्र स्थानों में पूजा कर रहे है और हाथियों एवं घोड़ो पर सवार लोग जुलूस में चल रहे है। जंगलों में हाथी घूम रहे है और सिंह मयूर अन्य वास्तविक पशु पक्षी भरे पड़े है।

विस्तार से लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 20.

1. **अधिकारियों की अनुशासन हीनता –** पुर्तगाली अधिकारी तो अनुशासन हीनता पर नियंत्रित थे किन्तु बाद में अप्रत्याशित सफलता के कारण उनमें अनुशासन हीनता आ गई। प्रारंभ में अधिकारी मुसलमानों से घृणा करते थे। परंतु बाद में हिन्दुओं पर भी अत्याचार करने लगे। उन्होंने व्यापार में कम और लूट पात में अधिक ध्यान दिया। सैन्य शक्ति के बल पर भारतीय राजाओं के व्यक्तिगत सहर्षों में रूचि लेने लगे। कम्पनी के संचालक गण

कभी अपने अधिकारियों की इन गतिविधियों का विरोध नहीं करते थे जिनका दूरगामी प्रभाव पड़ा।

2. **धार्मिक नीति** – पुर्तगाली व्यापार में स्थाइत्व प्राप्त करते ही ईसाई धर्म प्रचार में संलग्न हो गए। इस हेतु हिन्दुओं और मुसलमानों को उन्होंने जबरदस्ती ईसाई बनाया। इससे लोगों को उनके प्रति सहानुभूति कम हो गई। पुर्तगालियों की नीति मुख्यतः धार्मिक असहिष्णुता की नीति थी। जिससे जनता में विरक्तता स्वाभाविक हो गई थी।

3. **आर्थिक संसाधनों की कमी** – पुर्तगालियों के आर्थिक संसाधनों की संख्या सीमित थी। फलतः व्यापार में बड़ी राशि एक साथ खर्च करने में वे असमर्थ थे। उनका क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया क्योंकि भारत के साथ ब्राजील में भी उनका उपनिवेश स्थापना प्रयास हो रहा था। इस प्रकार एक साथ दोनों देशों में उनके व्यापारिक विस्तार से आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया, जिससे व्यापार व्यवसाय पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

4. **पुर्तगाल की पराजय** – 1580 ई. में पुर्तगाल को युद्ध में पराजित कर उसे अपने देश में मिला लिया इसके दो परिणाम हुए। पहला यह कि स्पेन के द्वारा व्यापार को संरक्षण नहीं मिला तथा दूसरा यह कि स्पेन के प्रमुख विरोधी डच थे जो पुर्तगाली कंपनी के क्षेत्र में कट्टर प्रतिद्वन्दी बन गए।

5. **अधिकारियों की अदूरदर्शिता** – भारत में पुर्तगाली व्यापारिक कम्पनी की स्थापना के दिनों में महा योग्य चतुर गवर्नर नियुक्ति किए गए, जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता से कम्पनी के क्षेत्र को बढ़ाया किन्तु अल्बुक्र्क की मृत्यु के बाद परवर्ती अधिकारी अदूरदर्शी निकले जिन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ तक अपने

आपको सीमित रखा। साथ ही सर्वत्र भ्रष्टाचार और घूसखोरों का माहौल बन जाने से कम्पनी की साख गिर गई और पतन अवश्यम्भावी हो गया।

6. **मुगल शक्ति का विस्तार** – मुगलों द्वारा दक्षिण भारत में साम्राज्य विस्तार के कारण शीघ्र ही पुर्तगालियों की साम्राज्यवादी लालसाएं समाप्त हो गई।

6 अंक

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं का विस्तार दिये जाने पर 6 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1. **कलकत्ता की कोठी पर आक्रमण** – नवाब की सेना ने कासिम बाजार कोठी को अपने अधिकार में लेकर कलकत्ता की ओर कूच किया। इस आक्रमण से वहां का गवर्नर हालवेल भाग गया और नवाब का कलकत्ता पर 20 जून 1756 ई. में अधिकार स्थापित हो गया। सिराजुद्दौला न कलकता का नाम अली नगर रखा।
2. **नवाब का कासिम बाजार कोठी पर अधिकार** – विभिन्न कारणों से क्रोधित होकर नवाब सिराजुद्दौला में अंग्रेजों के कासिम बाजार कोठी पर गई। 1756 ई. में आक्रमण कर अपने अधिकार में ले लिया अंग्रेजों ने बिना युद्ध किए ही भयभीत होकर आत्म समर्पण कर दिया तथा अंग्रेज प्रमुख ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली नवाब का अंग्रेजों के विरूद्ध यह सफल अभियान था।
3. **अंग्रेजों द्वारा किले बन्दी करना** – यूरोपीय कम्पनियों (अंग्रेज व फ्रांसीसी) द्वारा जब किले बन्दी की जाने लगी तो सिराजुद्दौला ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। फ्रांसीसियों ने नवाब के आदेश का अनुशरण तो किया किन्तु अंग्रेजों ने ऐसा करने से साफ इंकार कर दिया। इससे नवाब नाराज हो गया और अंग्रेजों की किले बन्दी कार्यवाही को अपना अपमान समझा। फलतः ऐसी स्थिति में संघर्ष सुनिश्चित हो गया।

4. **अंग्रेजों द्वारा नवाब विद्रोहियों को संरक्षण –** सिराजुद्दौला के नवाब बनते ही अंग्रेजों ने उनके आदेश को अवहेलना करना प्रारंभ कर दिया। नवाब के दरबार या अन्य विद्रोही लोगों को अंग्रेज कलकत्ता में शरण देने लगे। नवाब की सम्पत्ति के गबन के आरोपी राजवल्लभ के पुत्र कृष्ण वल्लभ व उनके परिवार को अंग्रेजों ने अपने यहां शरण दी। नवाब द्वारा उन्हें सौंपने की मांग को भी वे नजर अंदाज कर गए। इससे नवाब क्रुद्ध हो गया।
5. **उत्तराधिकार का संघर्ष –** अलीवर्दी खां ने मृत्यु पूर्व ही सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया परंतु अलीवदी खां के निधन के बाद गद्दी हेतु पारिवारिक संघर्ष शुरू हो गया। इसमें सिराजुद्दौला के विरूद्ध शौकतजग जो उसकी मौसी का लड़का था, सामने आ गया। वस्तुतः सिराजुद्दौला अलीवर्दी खां की पुत्री का पुत्र था जिसका उत्तराधिकार के लिए उसने अपने मौसियों के और उनके पुत्रों से संघर्ष किया था। उसे कुछ हिन्दुओं और घसीटी बेगम (सिराजुद्दौला की दूसरी मौसी) का समर्थन प्राप्त था। इस संघर्ष में अंग्रेज भी सम्मिलित हो गए और शौकतजंग को संरक्षण देने लगे।
6. **अंग्रेजों द्वारा शाही फरमान का उल्लंघन –** ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को मुगल सम्राट पर्रूख सियर ने 1717 ई. में एक शाही फरमान के द्वारा कार्यमुक्त व्यापार की अनुमति प्रदान की थी। यह सुविधा कम्पनी के कर्मचारियों के निजी व्यवसाय हेतु नहीं थी किन्तु अंग्रेज कर्मचारी उक्त शाही फरमान का गलत उपयोग कर निजी व्यवसाय पर भी कर अदा नहीं करते थे। इससे नवाब को आर्थिक क्षति होती थी साथ ही बंगाल के आन्तरिक व्यापार पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता था। अंग्रेज भारतीय व्यापारियों को भी कर अदा नहीं करने के लिए प्रेरित करते थे। सिराजुद्दौला व्यापार की सुविधा के इस दुरूपयोग से नाराज था तथा उस पर रोक लगाना चाहता था। विपिन्नचन्द्र जी लिखते है ''मुर्शीद कुली खां से लेकर

अली वर्दी खां तक बंगाल के सभी नवाबों ने 1717 ई. के शाही फरमान की अंग्रेजों की व्याख्या पर आपत्ति की थी।''

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं या अन्य बिन्दुओं पर विस्तार देने पर कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 21. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम – ''जुलाई 1947 ई. को ब्रिटेन की संसद ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित कर दिया।

1. **दो अधिराज्यों की स्थापना –** 15 अगस्त 1947 ई. को भारत तथा पाकिस्तान दो स्वतंत्र राज्य बना दिए जाऐंगे तथा ब्रिटिश सरकार उन्हें सत्ता सौप देगी।

2. **संविधान सभाओं का निर्माण** – दोनों राज्यों को संविधान सभाएं अपने–अपने देशों के लिए संविधान का निर्माण करेगी।

3. **राष्ट्र मण्डल की सदस्यता –** भारत और पाकिस्तान दोनों राज्यों का राष्ट्र मण्डल में बने रहने या छोड़ने की स्वतंत्रता रहेगी।

4. **भारत सचिव पद की समाप्ति –** भारत सचिव का पद समाप्त कर दिया जाएगा तथा दोनों देशों को ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त कर दिया जायेगा।

5. **ब्रिटिश शक्ति का अन्त –** भारत और पाकिस्तान के संबंध में ब्रिटिश सरकार की समस्त शक्तियां समाप्त कर दी गई।

6. **1935 ई. के अधिनियम द्वारा अन्तरिम सरकार –** नए संविधान के बनाने तक 1935 ई. के अधिनियम के अनुसार दोनों देशों का शासन चलेगा।

7. **ब्रिटिश की सन्धियों की समाप्ति –** भारत के देशी राज्यों पर से ब्रिटिश संप्रभुता समाप्त कर दी गई तथा ब्रिटेन उनके बीच की गई पुरानी संधियां समाप्ति हो गई।

8. **दोनों देशों में गवर्नर जनरल की व्यवस्था –** भारत और पाकिस्तान दोनों में एक–एक गवर्नर जनरल होगा। जिसकी नियुक्ति उनके मंत्रीमंडल की सलाह से की जाएगी।

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं एवं अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1. **योजना तथा साधनों का अभाव –** इन आन्दोलनों की न तो कोई रूपरेखा तैयार की थी और न ही योजनाबद्ध तरीके से आवश्यक साधनों की व्यवस्था की गई थी। जन साधारण को यह ज्ञात नहीं था कि किस तरीके से गांधी जी इस आन्दोलन को चलाना चाहते थे।
2. **भारतीय पुलिस और सेना का असहयोग –** आन्दोलन के कर्ताधर्ताओं ने न तो जनमानस का और न ही भारतीय पुलिस और सेना का सहयोग या मूक समर्थन पाने का प्रयास किया था। फलस्वरूप हजारों आन्दोलनकारी और सेना कठोर कार्यवाही से मारे गए।
3. **नेतृत्व –** कांग्रेस कार्यकर्ता और नेता इस आन्दोलन के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे। फलतः नेतृत्व के अभाव में आन्दोलनकारियों के हाथों में चला गया। कांग्रेस के सभी आन्दोलन अहिंसक होते थे पर वह आन्दोलन अहिंसक नहीं रह गया।
4. आन्दोलन समिति क्षेत्र में सिमट कर रह गया था। यह आन्दोलन देश व्यापारी आन्दोलन का स्वरूप धारण नहीं कर सका। करो या मरो का नारा शहरों में सिमट कर रह गया था।

5. **मुस्लिम एवं देशी शासकों का सहयोग –** इस आन्दोलन में अधिकांश मुस्लिम समुदाय का सहयोग और समर्थन नहीं मिल सका। बंगाल और मिदनापुर को छोड़कर समूचा पश्चिमी सीमा प्रान्त बलोचिस्तान, सिंध पंजाब मुस्लिम लीग के साथ थे। इसी तरह देशी राज्यों के शासकों ने अंग्रेजों के साथ वफादारी दिखाते हुए अपने राज्यों में इस आन्दोलन को सक्रिय नहीं होने दिया। कम्युनिस्ठो ने भी आन्दोलन का समर्थन नहीं किया।
6. **कठोरता दमन चक्र –** ब्रिटिश शासन ने भारत छोड़ों आन्दोलन का अत्यंत क्रूरता तथा कठोरता के साथ दमन किया। पुलिस तथा सेना ने लाखों व्यक्तियों को बन्दी बनाया तथा हजारों व्यक्तियों को गोली से भून दिया। महिलाओं को अपमानित किया गया तथा सामूहिक जुर्माने कर कठोरता पूर्वक वसूल किया गया।

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

– – – – –